Introduction

प्राक्कथन

000000

विषय के प्रति अभिरुचि :

प्रस्तुत प्रबन्ध का विषय "हिन्दी पत्र-साहित्य" का अध्ययन है । पत्र-साहित्य आत्माभिव्यक्ति का सहज रूप है और आत्माभिव्यक्ति मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है । मानव जब तक अपने बन्धु-बान्धवों, स्वजन-परिजनों, इष्ट-मित्रों आदि के सम्मुख अपने भावों और विचारों को अभिव्यक्त नहीं करता, तब तक उसे आत्मसंतुष्टि का अनुभव नहीं होता। साहित्य के निर्माण में भी आत्माभिव्यंजन की यही प्रवृत्ति प्रेरक रूप में कार्य करती है । डा० भगीरथ मिश्र के मतानुसार "क्रोचे, गेटे , हीगल , टैगोर, प्रसाद आदि साहित्यकारों ने प्रधानतया साहित्य को आत्माभिव्यक्ति के रूप में ही स्वीकार किया है ।"[१] वैसे तो साहित्य के सभी रूपों में आत्माभिव्यक्ति की प्रवृत्ति न्यूनाधिक रूप में संनिहित होती है, किन्तु पत्र-साहित्य में वह प्रत्यक्ष एवं यथार्थ की सर्वाधिक गहरी छाप लिए रहती है । दूसरे शब्दों में, लेखक के व्यक्तित्व का, उसके द्वारा लिखे गये पत्रों के साथ, प्रत्यक्ष और आत्मदर्शी सम्बन्ध होता है । अत: लेखक का व्यक्तित्व जितने स्वच्छ और स्पष्ट रूप में उसके पत्रों में प्रतिबिम्बित होता है, उतना साहित्य की अन्य विधाओं में नहीं ।

यद्यपि पत्र-लेखन की कला यथेष्ट रूप में पुरानी है, किन्तु साहित्य से उसका सम्बन्ध मुख्यत: आधुनिक युग में स्थापित हुआ है । दूसरे शब्दों में, हमारे यहां पत्र-सामग्री तो पुष्कल थी परन्तु पत्र-साहित्य के रूप में कोई पृथक् विधा नहीं थी । आधुनिक युग में महान् व्यक्तियों के पत्रों को संगृहीत कर प्रकाशित करने की प्रवृत्ति से पत्र-साहित्य का एक स्वतंत्र विधा के रूप में विकास हुआ है ।

प्रस्तुत प्रबन्ध के लेखक को स्नातक कक्षा के अध्ययनकाल से ही इस विषय के प्रति आकर्षण था । अनुस्नातक श्रेणी की परीक्षा उत्तीर्ण करने के कुछ वर्षों बाद उसने सोचा कि क्यों न मैं इसी विषय को शोध-कार्य के रूप में स्वीकार करूं ? ठीक उसी समय हिन्दी के चिन्तनशील कवि एवं

---

१ "कला, साहित्य और समीक्षा" (१९६२), पृ० ३० ।

हिन्दी प्रचार सभा, मथुरा के अध्यक्ष श्री त्रिलोकीनाथ व्रजबाल का पत्र के माध्यम से परिचय प्राप्त हुआ । वे उन दिनों "हिन्दी आत्मकथा-साहित्य" पर महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा में डा० - शुक्ल जी के निर्देशन में शोध-कार्य कर रहे थे । बन्धुवर श्री व्रजलाल जी ने लेखक को प्रोत्साहित कर अपने निर्देशक महोदय से सम्पर्क स्थापित करने की प्रेरणा दी । आदरणीय डा० शुक्ल जी ने लेखक की अभिरुचि के विषय को शोध की दृष्टि से उपयुक्त समझा और महाराजा सयाजी-राव विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभागाध्यक्ष पूज्यवर डा० मदनगोपालजी गुप्त ने विषय के पंजीकरण की स्वीकृति प्रदान कर लेखक को अनुगृहीत किया ।

विषय का महत्व :

प्रस्तुत प्रबन्ध का उद्देश्य हिन्दी पत्र-साहित्य का शोधपरक दृष्टि से अनुशीलन करना है । हिन्दी में प्राचीनकाल से लगाकर अब तक का लिखा हुआ प्रचुर पत्र-साहित्य प्रकाश में आ चुका है और इसमें साहित्य, इतिहास, राजनीति, संस्कृति आदि अनेक विषयों की मूल्यवान् सामग्री उपलब्ध होती है, किन्तु इसकी ओर शोधकर्ताओं का ध्यान आकृष्ट नहीं हो सका है । हिन्दीतर अन्य भारतीय भाषाओं - जैसे, उर्दू,[1] बंगला[2] आदि में इस दिशा में महत्वपूर्ण शोधकार्य हो चुका है, परन्तु हिन्दी में इसको विधिवत् समझने तथा शोध-स्तर पर इसका विविध दृष्टियों से विवेचन करने का प्रयास अबतक नहीं हुआ है । श्रद्धेय गुरुवर डा० दयाशंकर शुक्ल के मार्गदर्शन से इस प्रबन्ध के लेखक को हिन्दी के प्रसिद्ध

१" डा० ख्वाजा अहमद फारूकी का "मक्तूबाते उर्दू का अदबी और तारीखी इरतिका" शीर्षक शोध-प्रबन्ध दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत हो चुका है ।

- डा० ख्वाजा अहमद फारूकी से हुई प्रत्यक्ष भेंट के आधार पर।

२" बंगला-भाषा के अन्तर्गत प्रेम-पत्रों पर इधर एक महत्वपूर्ण शोधकार्य डा० जी०सी० सामन्त के द्वारा प्रस्तुत किया गया है ।"

- डा० सीताराम दीन : "साहित्यालोचन : सिद्धांत और अध्ययन" (१९७१), पृ० १५५)

साहित्यकारों तथा विभिन्न क्षेत्रों के मनीषियों के अनेक बहुमूल्य पत्रों को पढ़ने तथा उनका सार-संक्षेप प्रस्तुत करने की आवश्यकता पड़ी है। ये पत्र व्यक्ति-विशेष को सम्बोधित होते हुए भी अपनी मानवीय तत्व-राशि के कारण प्रकाश में आकर साहित्य की स्थायी सम्पत्ति बन गये हैं।

पत्र-साहित्य का सबसे बड़ा महत्व इस बात में है कि इसमें साहित्य की सब विधाओं की अपेक्षा लेखक के व्यक्तित्व की झलक अधिक रहती है।[1] पत्रों में एक व्यक्ति को जो कहना होता है उसे वह सीधा दूसरे व्यक्ति से कहता है। अत: यदि किसी व्यक्ति को हम उसके सहज रूप में देखना चाहें तो उसके पत्रों में ही देख सकते हैं। इस प्रकार किसी व्यक्ति-विशेष के यथार्थ अध्ययन के लिए उसके पत्रों का अध्ययन अनिवार्य है। हिन्दी में साहित्यकारों तथा विभिन्न क्षेत्रों के मनीषियों के जो पत्र प्रकाशित हुए हैं, उनका अध्ययन करने से हमें उनके बहुमुखी व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व को समझने में पर्याप्त सहायता मिलती है। साथ ही, उनके सम्बन्ध में फैली हुई भ्रान्तियों का निराकरण होता है और नये तथ्यों पर प्रकाश पड़ता है।

हिन्दी साहित्यकारों तथा विभिन्न क्षेत्रों के मनीषियों के पत्र समकालीन इतिहास के मूल्यवान् दस्तावेज़ होते हैं। अत: पत्र-साहित्य के अध्ययन से हमें तत्कालीन साहित्यिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों को देखने-परखने में अपूर्व सहयोग प्राप्त होता है।

हिन्दी गद्य के रूपात्मक विकास को समझने के लिए भी पत्र-साहित्य का अनुशीलन महत्वपूर्ण है। हिन्दी गद्य का प्राचीन स्वरूप कैसा था, उसमें समय-समय पर किस प्रकार परिवर्तन हुआ इत्यादि तथ्यों का पता हमें पत्र-साहित्य के अध्ययन से भी लगता है।

---

1 " Indeed all literary composition enables the reader to see the Character of writer, but none does this so clearly as the letters ".
-Dematrius ; on Style, P. 251.
(उद्धृत : 'द्विवेदी-युग की हिन्दी गद्य-शैलियों का अध्ययन', डा० शंकरदयाल चौकड़िया, पृ० ४३४)

पत्र-साहित्य का अध्ययन आज के यांत्रिक युग में मानव-व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा एवं मैत्री-भावना के प्रसार की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है । प्रसिद्ध-मनीषी अज्ञेय ने भी यही मत प्रकट किया है -

"संस्मरणों, पत्रों, डायरियों या आत्म-वृत्त के दूसरे रूपों का महत्व आधुनिक युग में बहुत बढ़ गया है । इसका अगर केवल बाहरी कारण देखना हो तो कहा जा सकता है कि आज की मशीन जिन्दगी ने मनुष्य के व्यक्तित्व को इतना छोटा कर दिया है - उसके दर्जे को इतना गिरा दिया है कि उसके लिए जरूरी हो गया है कि इस बात की दुहाई दे कि वह मशीन या मशीन का पुर्जा भर नहीं है, मानव है जिसका व्यक्तित्व होता है और व्यक्तित्व भी अद्वितीय : कोई दो मनुष्य बिलकुल एक-से नहीं होते ।"[१]

इसके अतिरिक्त साहित्यकारों और विभिन्न क्षेत्रों के मनीषियों के पत्र हमारा मनोरंजन करके हमारे सम्मुख पत्र-लेखन शैली का आदर्श रूप भी प्रस्तुत करते हैं ।[२] साथ ही साथ हमें उन्नत जीवन की प्रेरणा भी देते हैं ।

उपलब्ध सामग्री :

प्रस्तुत विषय के पंजीकरण के पश्चात् जब प्रबन्ध-लेखक अध्ययन की ओर प्रवृत्त हुआ तो सबसे पहले उसके सामने सामग्री-संकलन की समस्या खड़ी हुई । गुजरात में, अहिन्दीभाषी प्रदेश होने के कारण, पत्र-साहित्य-विषयक आधारभूत एवं आलोचनात्मक सामग्री संचित करना कठिन प्रतीत हुआ । इसलिए उसे कई बार हिन्दी प्रदेशों की शोध-यात्रा करनी

१" हिन्दी साहित्य : एक आधुनिक परिदृश्य ," पृ० १८५ ।

२" Reading such letters will not intertain you for who does not-enjoy reading a lively personal letter ? - but will also inspire you to write more readable letters ".

-Compton's Pictured Encyclopedia and Fact-Index, Vol.- 8, P.- 171.

पड़ी । पत्र-संग्रह और सहायक ग्रंथ किसी एक स्थान पर प्राप्त नहीं हो सके । अतएव मारवाड़ी लायब्रेरी, दिल्ली; हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग; नागरी प्रचारिणी सभा, काशी; श्रीमती परोपकारिणी सभा, अजमेर; भारतकला भवन, बनारस; भारती अनुसंधान भवन, मथुरा आदि संस्थाओं के ग्रंथागारों, पं० बनारसीदास चतुर्वेदी, बाबू वृन्दावनदास आदि विद्वानों के निजी भण्डारों तथा दिल्ली, इलाहाबाद, आगरा, बनारस, जयपुर आदि विश्वविद्यालयों के ग्रंथालयों से अपने विषय-सम्बन्धी सामग्री एकत्रित की गयी । तदुपरांत विषय के स्पष्टीकरण एवं मार्गदर्शन के लिए पत्र-साहित्य के लेखकों, पत्र-संग्रहों के सम्पादकों तथा वरिष्ठ विद्वानों से विस्तृत पत्र-व्यवहार भी किया गया । इस प्रकार प्रयास और परिश्रम के पश्चात् प्रस्तुत शोध-विषय से सम्बन्धित जो सामग्री उपलब्ध हुई उसे दो विभागों में विभक्त किया जा सकता है :-

(अ) आधारभूत अथवा उपजीव्य सामग्री तथा

(आ) आलोचनात्मक और सहायक सामग्री ।

(अ) आधारभूत अथवा उपजीव्य सामग्री :

हिन्दी पत्र-साहित्य के सम्बन्ध में सामान्यत: यह धारणा प्रवर्तमान है कि इसकी स्थिति अभी तक बहुत क्षीण है ।[1] परन्तु प्रस्तुत

१ (क) "हिन्दी में पत्र-साहित्य की स्थिति अभीतक बहुत क्षीण-हीन है ।"
-डा० शंकरदयाल चौकशि: "द्विवेदी-युग की हिन्दी गद्य-शैलियों का अध्ययन" (१९६५) पृ० ४३५ ।

(ख) "हिन्दी भाषा में केवल नामोल्लेख के लिए ही पत्र-साहित्य मिलता है।"
- डा० मालखानसिंह सिसौदिया, "सौम्य एवं समन्वयशील व्यक्तित्व" (लेख), बाबू वृन्दावनदास अभिनंदन-ग्रंथ (१९७५), पृ० ६८ ।

(ग) "हिन्दी में पत्र-साहित्य की स्थिति आज भी बहुत अच्छी नहीं है - - - - "
- मधुरेश : "यशपाल के पत्र" (१९७७), भूमिका, पृ० ३८ ।

प्रबन्ध-लेखक को जो सामग्री उपलब्ध हुई है, उसे देखते हुए कहा जा सकता है कि पिछले तीन-चार दशकों से हिन्दी में स्तरीय पत्र-साहित्य प्रकाश में आया है । प्रसिद्ध समाज-सेवियों, राजनीतिज्ञों और साहित्यकारों के अनेक पत्र-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं । अकेले स्वामी दयानन्द सरस्वती के छह पत्र-संग्रह बहुत पहले ही प्रकाशित हो चुके हैं । महात्मागांधी द्वारा हिन्दी में लिखे गये पत्रों के संग्रह भी प्रकाश में आ चुके हैं । प्रसिद्ध गांधी-वादी कार्यकर्ता तथा समाज-सेवक सेठ जमनालाल बजाज का विभिन्न क्षेत्रों के कार्यकर्ताओं तथा अपने परिजनों के साथ हुआ विस्तृत "पत्रव्यवहार" आठ खण्डों में प्रकाशित है । इसी प्रकार द्विवेदी-युग, छायावाद-युग तथा वर्तमान-युग के प्रमुख साहित्यकारों के पत्र-संग्रह भी निकल चुके हैं । भारते-न्दु-युग के साहित्यकारों के पत्र विभिन्न जीवन-चरित्रों तथा शोध-प्रबन्धों के परिशिष्टों में प्राप्त हो जाते हैं । प्राचीनकाल से सम्बन्धित पत्रों के संग्रह भी प्रकाशित हो गये हैं । इसके अतिरिक्त दैनिक, साप्ताहिक, मासिक आदि विविध पत्र-पत्रिकाओं में भी मनीषियों के महत्वपूर्ण पत्र प्रकाशित हुए हैं । स्मृतिग्रंथों एवं अभिनन्दन-ग्रंथों में भी अनेक बहुमूल्य पत्र संकलित हैं । इस प्रकार प्रस्तुत विषय पर शोध के लिए पर्याप्त सामग्री उपलब्ध है ।

(आ) आलोचनात्मक और सहायक सामग्री :

जैसा कि पहले कहा गया है, हिन्दी पत्र-साहित्य के सम्बन्ध में अद्यावधि कोई शोधकार्य देखने में नहीं आया । विषय के पंजीकरण से पहले प्रस्तुत प्रबन्ध के लेखक ने विभिन्न विश्वविद्यालयों में पंजीकृत एवं स्वीकृत शोध-विषयों की सूचियां देख ली थी । डा० सरनामसिंह शर्मा लिखित "शोध-प्रक्रिया और विवरणिका"[1] शीर्षक पुस्तक के विवरणिका खण्ड में "हिन्दीगद्य (सामान्य)" विभाग के अन्तर्गत आगरा विश्वविद्यालय में पंजीकृत "हिन्दी में पत्र-साहित्य" शीर्षक शोध-विषय को पढ़कर लेखक ने आगरा विश्वविद्यालय से स्वीकृत शोध-प्रबन्धों की सूची मंगवाई और उसे देखने से पता चला कि उक्त विषय हिन्दी पत्रकारिता से सम्बन्धित था।

---

१ "शोध-प्रक्रिया और विवरणिका" (१९६४), पृ० १६४-६५ ।

श्री राम अवतार शर्मा ने आगरा विश्व विद्यालय में पी०एच०डी० की उपाधि के लिए "हिन्दी साहित्य के विकास में हिन्दी पत्रकारिता का योगदान (सन् १९५० तक)" शीर्षक शोध-विषय पंजीकृत कराया था। अब वह प्रबन्ध के रूप में स्वीकृत है।

सन् १९७६ ई० में प्रकाशित "हिन्दी अनुशीलन" के बृहत् शोध-अंक में विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा स्वीकृत शोध-प्रबन्धों की जो विषय-वार सूचियाँ दी गयी हैं, उनमें भी कहीं प्रस्तुत विषय का उल्लेख नहीं है। अत: कहा जा सकता है कि शोध की दृष्टि से यह एक नवीन विषय है।

डा० काशिनाथशंकर केलकर द्वारा लिखित "१८ वीं शती के हिन्दी पत्र" शीर्षक शोध-प्रबन्ध एक निश्चित कालावधि तक ही सीमित है और उसमें मराठी क्षेत्र से सम्बन्धित केवल २०८ हिन्दी पत्रों का भाषा वैज्ञानिक तथा ऐतिहासिक दृष्टि से ही अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत शोध-विषय पर कोई स्वतंत्र समीक्षा ग्रंथ भी देखने को नहीं मिला। हां, विभिन्न समालोचना-ग्रंथों, साहित्य के इतिहासों, शोध-प्रबन्धों, अभिनन्दन-ग्रंथों, कोश ग्रंथ, पत्र-संग्रहों की भूमिकाओं तथा दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, आदि पत्र-पत्रिकाओं में इस विषय के अनेक प्रासंगिक लेख, उल्लेख एवं टिप्पणियाँ अवश्य मिलती हैं जिनका संक्षिप्त उल्लेख इस प्रकार किया जा सकता है :-

(क) साहित्यालोचन-विषयक-ग्रंथ :

१- काव्य के रूप (१९५४), गुलाब राय,
प्रकरण-८ : श्रव्य काव्य : अन्यविधाएं : पत्र-साहित्य
पृ० २६०-२६३।

२- शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त खण्ड-२ (१९५९),
डा० गोविन्द त्रिगुणायत।
'पत्र-साहित्य' शीर्षक समीक्षात्मक टिप्पणी,
पृ० ५१३-५१४।

३- साहित्यरूप (सं० २०२३ वि०), डा० राम अवध द्विवेदी
प्रकरण-८ : विविध गद्य-साहित्य : पत्र-साहित्य,
पृ० १३८-१४४।

४- साहित्यानुशासनम् (सं० २०२६ वि०), आचार्य पं० सीताराम चतुर्वेदी ,
"पत्र-साहित्यम्" शीर्षक विवेचनात्मक टिप्पणी ,
पृ० १०००-१००४ ।

५- सिद्धान्तालोचन (प्र०सं०), धर्मचन्द संत, बलदेव कृष्ण
"पत्र" शीर्षक टिप्पणी ।
पृ० २१८-२२६ ।

६- साहित्यालोचन : सिद्धान्त और अध्ययन (१९७१),
डा० सीताराम दीन
अध्याय-१० : रिपोर्ताज : पत्र-साहित्य : यात्रा :
डायरी : रेडियोवार्ता : विविध
पृ० १५३-१५५ ।

७- आधुनिक हिन्दी गद्य-साहित्य(१९७२), डा० हरिदयाल
अन्य गद्य-विधाएं, गद्यगीत, रेखाचित्र - - - -
जीवनी, पत्र, रिपोर्ताज ,
पृ० १७३-१७५ ।

(ख) इतिहास-ग्रंथ :

१- हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास, चतुर्दशभाग(२०२७वि०)
संपा० डा० हरिवंशलाल शर्मा
षष्ठ खण्ड : अध्याय-५ : पत्र-साहित्य ,
पृ० ५०५-५२२ ।

२- हिन्दी साहित्य का इतिहास (१९७३),
संपा० डा० नगेन्द्र ,
द्विवेदी-युग, छायावाद-युग तथा छायावादोत्तर के
गद्य-साहित्य के अन्तर्गत "पत्र-साहित्य" की चर्चा ।
पृ० ५३०,६०१,७२२-२३ ।

(ग) शोध-प्रबन्ध :

१- द्विवेदी-युग की हिन्दी गद्य-शैलियों का अध्ययन(१९६५),
डा० शंकरदयाल चौकशि,
अध्याय-११(ख): पत्र-साहित्य,
पृ० ४३३-४४२ ।

२- आधुनिक हिन्दी का जीवनीपरक साहित्य (१९७३),
डा० शांति खन्ना ,
अध्याय-७ (क) : पत्र ,
पृ० २३६-२४९ ।

३- हिन्दी गद्य-साहित्य(१९७५), डा० चन्द्रभानु सोनवणे ,
अध्याय-६ : क्रम-७ : पत्र-साहित्य, पृ० १८१-८२ ।

(घ) अभिनन्दन-ग्रंथ :

१- स्वतंत्रता रजत जयन्ती अभिनन्दन-ग्रंथ (१९७३),
संपा० गोपाल प्रसाद व्यास ,
"स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी पत्र-साहित्य," मार्तण्ड उपाध्याय
पृ० ६००-६०८ ।

२- बाबू वृन्दावनदास अभिनन्दन-ग्रंथ (१९७५),
संपा० आनन्दस्वरूप पाठक और अन्य,
"निष्णात पत्र-लेखक", डा० श्यामसुन्दर बादल,पृ० ६२ ।
"पत्र-विधा के उन्नायक", डा० सरलादेवी, पृ० १६१ ।
"पत्र-साहित्य के संकलन कर्ता",डा० माधुरी दुबे,पृ० १९४ ।

(ङ) कोश-ग्रंथ :

१- साहित्य शास्त्र का पारिभाषिक कोश (१९५५),
राजेन्द्र द्विवेदी ,
"पत्र" पृ० १३८ ।

२- हिन्दी साहित्य कोश भाग-९(सं० २०२० वि०),
संपा० डा० धीरेन्द्र वर्मा और अन्य
"पत्र-साहित्य" पृ० ४७०-७१ ।

३- मानविकी पारिभाषिक कोश,साहित्य खण्ड-(१९६५),
संपा० डा० नगेन्द्र
"Letter" पृ० १५८-५९ ।

(च) पत्र-पत्रिकाएं :

१- नवीन जी : पत्र-लेखक के रूप में, बनारसीदास चतुर्वेदी,
"विशाल भारत" नवम्बर १९६३ ।

२- वृन्दावनलाल वर्मा : पत्र के दर्पण में, डा० सुरेशचन्द्र गुप्त, "विशाल भारत," दिसम्बर १९६३ ।

३- आचार्य शिवजी : पत्र-लेखक के रूप में, डा० लक्ष्मीनारायण दुबे, "साहित्य", १९६४ ।

४- निजीपत्रों में दादा का व्यक्तित्व, नर्मदा प्रसाद खरे, "रसवन्ती", अक्टूबर १९६८ ।

५- हिन्दी में पत्र-साहित्य, रामशंकर द्विवेदी, "परिषदपत्रिका", जनवरी १९७२ ।

उक्त ग्रंथों एवं पत्र-पत्रिकाओं में उपलब्ध सामग्री में विविधता और विदग्धता तो है, परन्तु इसकी संक्षिप्तता एवं अपर्याप्तता भी हम स्पष्ट रूप से देख सकते हैं । अत: पत्र-साहित्य पर व्यवस्थित अध्ययन शोध-सापेक्ष प्रतीत होता है ।

विषय की सीमा का स्पष्टीकरण :

पत्र-साहित्य के स्वरूप, क्षेत्र और सीमा के सम्बन्ध में हिन्दी विद्वानों, विवेचकों तथा इतिहास-लेखकों के बीच मतैक्य नहीं है । कुछ विद्वान् केवल साहित्यकारों के वैयक्तिक पत्रकों को ही "पत्र-साहित्य" समझते हैं तो कुछ विवेचक केवल साहित्यिक पत्रों अर्थात् साहित्य की विभिन्न विधाओं में लिखे गये पत्रों को ही "पत्र-साहित्य" मानते हैं । इतिहास-ग्रंथों में हिन्दी पत्र-साहित्य का विवेचन-विश्लेषण अत्यन्त व्यापक दृष्टि से किया गया है । उनमें काल्पनिक, वास्तविक, औपचारिक, अनौपचारिक, मौलिक, अनूदित आदि सभी प्रकार के पत्रों को "पत्र-साहित्य की परिधि में समाविष्ट किया गया है[१] । यहां तक एक इतिहास-ग्रंथ में डा० काशिनाथ शंकर केलकर लिखित "१८ वीं शती के हिन्दी पत्र" शीर्षक शोध-प्रबन्ध को भी व्यक्तिगत पत्रों के स्वतंत्र संकलनों की सूची में सम्मिलित कर लिया गया है ।

पत्र की अनौपचारिक शैली तथा वैयक्तिकता से प्रभावित होकर अनेक हिन्दी साहित्यकारों ने पत्र-शैली में साहित्य की उपन्यास, कहानी, निबन्ध, कविता जैसी विधाओं की रचना की है । पाण्डेय बेचन शर्मा -

---

१ "हिन्दी-साहित्य का इतिहास" (१९७३), संपा० डा० नगेन्द्र, पृ० ७२२ ।

"उग्र" लिखित "चन्द हसीनों के खतूत", जयशंकर "प्रसाद" लिखित "देवदासी" बाबू बालमुकुन्द गुप्त लिखित "शिव शम्भु के चिट्ठे", मैथिलीशरण गुप्त लिखित "पत्रावली" आदि ऐसी ही - रचनाएं हैं । कतिपय आलोचकों तथा विद्वानों ने पत्र-साहित्य के विवेचन में इन रचनाओं की चर्चा भी की है । परन्तु वास्तव में पत्र-साहित्य का महत्व उसके वैयक्तिक होने में ही है । हिन्दी के अधिकतर विवेचकों और विद्वानों ने भी पत्र-साहित्य का महत्व वैयक्तिक होने में स्वीकार किया है ।[१]

---

१ "(क) "आत्म-प्रकाशन की दृष्टि से सबसे अधिक महत्वपूर्ण पत्र वे होते हैं, जो स्नेहियों, घनिष्ठ मित्रों और निकटतम सम्बन्धियों को लिखे जाते हैं ।"

- डा० रामअवध द्विवेदी "-
"साहित्यरूप" (सं० २०२३ वि०), पृ० १३८ ।

(ख) "पत्र-लेखन ऐसी विधा है जिसमें वैयक्तिक-सामाजिक का भेद बहुत कम हो जाता है । वैसे भी साहित्य में जो सतत वैयक्तिक है, वह निर्वैयक्तिक होता रहता है ।"

- डा० प्रभाकर माचवे
(एक व्यक्तिगत पत्र से)

(ग) "साहित्य के अन्तर्गत जिन पत्रों ने महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है, वे अधिकांश निजी या व्यक्तिगत पत्र ही हैं ।

- डा० विश्वनाथ शुक्ल
"हिन्दी साहित्य का बृहद् इतिहास", भाग-१४
पृ० ५०७ ।

(घ) "दूसरे प्रकार के पत्र वे हैं जो पूर्णतः अनौपचारिक होते हैं - - - ये पत्र बड़े आत्मीय, मधुर और मोहक हो सकते हैं, साथ ही बड़े तीखे और चुभोटनेवाले भी । ये पाठकों को मोहभंग की अवस्था में ले जा सकते हैं ।

- डा० हरदयाल
"आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य" (१९७२),
पृ० १७४-१७५ ।

इस दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए जीवन के विविध-क्षेत्रों में कठोर परिश्रम, सेवा, त्याग, तपस्या और बलिदान करनेवाले तथा असाधारण प्रतिभा के कारण समाज में ख्याति-कीर्ति प्राप्त करने-वाले मनीषियों के वैयक्तिक पत्रों के आधार पर प्रस्तुत प्रबन्ध में पत्र-साहित्य का एक पृथक् विधा के रूप में अनुशीलन किया गया है । चूंकि साहित्यकारों के पत्र अपेक्षाकृत अधिक रोचक और आकर्षक होते हैं , इसलिए उन पर विस्तार से विचार किया गया है । प्राचीन पत्र-सामग्री की भी यथावश्यक चर्चा की गयी है । पत्र-शैली में लिखित साहित्य का भी प्रसंगत: उल्लेख किया गया है । सन् १९७८ तक प्रकाशित प्राय: सभी प्रमुख पत्र-संग्रहों का अनुशीलन किया गया है । इन प्रमुख विशिष्टताओं एवं परिसीमाओं के अन्तर्गत प्रस्तुत विषय के अध्ययन का विनम्र प्रयास किया गया है ।

प्रबन्ध की संक्षिप्त रूपरेखा :

प्रबन्ध को विषय-विवेचन की सुविधा की दृष्टि से छ: अध्यायों में विभक्त किया गया है ।

प्रथम अध्याय में पत्र-साहित्य का सैद्धान्तिक विवेचन है । सर्व-प्रथम पत्रों के महत्व पर विविध दृष्टियों से विचार किया गया है । तत्-पश्चात् विभिन्न समालोचना-ग्रंथों एवं कोश-ग्रंथों की सहायता से पत्र के व्युत्पत्यर्थ एवं अभिधेयार्थ, पत्र की विविध परिभाषाओं, इन परिभाषाओं में प्राप्त पत्र-विधा की प्रमुख विशेषताओं, साहित्य की अन्य विधाओं से पत्र का सम्बन्ध, पत्र के मुख्य तत्वों और प्रकारों की विस्तार से चर्चा की गयी है । इस विवेचन से यह सिद्ध करने का प्रयास किया गया है कि पत्र-विधा का एक स्वतंत्र साहित्यिक विधा के रूप में विवेचन-विश्लेषण अपेक्षित है ।

द्वितीय अध्याय में पत्र-साहित्य की पृष्ठभूमि तथा हिन्दी में उसके विकास का अध्ययन हुआ है । पृष्ठभूमि के अन्तर्गत संस्कृत एवं पाश्चात्य पत्र-साहित्य के स्वरूप और विकास, हिन्दी पत्र-लेखन की प्राचीन परम्परा तथा आधुनिकता और नवजागरण के सन्दर्भ में पत्र-साहित्य

के रूप-परिवर्तन की झांकी प्रस्तुत की गयी है । हिन्दी पत्र-साहित्य के विकास में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा निर्मित नये चाल के पत्रों का विशेष महत्व है । अत: इन पत्रों पर प्रकाश डालते हुए हिन्दी में सर्वप्रथम प्रकाशित पत्र-संग्रह तथा अन्य पत्र-संग्रहों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है । इन स्वतंत्र संग्रहों के अतिरिक्त हिन्दी के विविध ग्रंथों तथा पत्र-पत्रिकाओं में भी विपुल पत्र-साहित्य प्रकाशित हुआ है । अतएव प्रसंगत: उसका संक्षिप्त विवरण भी दिया गया है । अध्याय के अंत में प्रकाशित सामग्री के आधार पर हिन्दी पत्र-साहित्य के विभिन्न चरणों का विश्लेषण किया गया है । प्रस्तुत अध्याय में उन महत्वपूर्ण पत्र-संग्रहों की विशेष चर्चा की गयी है जिनके सम्बन्ध में इतिहास-ग्रंथों एवं समालोचना-ग्रंथों में प्रामाणिक जानकारी नहीं दी गयी है । साथ ही, यहां इस बात की ओर भी संकेत किया गया है कि इतिहासकारों तथा आलोचकों ने जिनको व्यक्तिगत पत्रों के स्वतंत्र संग्रह माना है, उनमें से कई संग्रहों का सम्बन्ध साहित्य की विविध विधाओं से है ।

तृतीय अध्याय में हिन्दी के प्रमुख पत्र-लेखकों, उनके पत्र-साहित्य तथा पत्रों में प्रतिबिम्बित उनके व्यक्तित्व का अनुशीलन किया गया है । द्वितीय अध्याय में इन पत्र-लेखकों तथा इनके पत्र-साहित्य का संक्षिप्त परिचय तो दिया गया है, किन्तु स्थानाभाव एवं विस्तारभय के कारण पत्रों में प्रतिबिम्बित उनके बहुमुखी व्यक्तित्व की चर्चा नहीं हो पायी है। अत: इस अध्याय में इन पर विस्तार से विचार किया गया है । अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से इन पत्र-लेखकों को दो वर्गों में विभाजित किया गया है- (१) साहित्यिक क्षेत्र के प्रमुख पत्र-लेखक और (२)साहित्येतर क्षेत्रों के प्रमुख पत्र-लेखक । इन दोनों वर्गों के पत्र-लेखकों को उनकी जन्म तिथि के क्रमानुसार रखा गया है । पत्रों में प्रतिबिम्बित लेखक के व्यक्तित्व का अनुशीलन जीवनी-सूत्र, चारित्रिक विशेषताओं तथा दृष्टिकोण के आधार पर किया गया है । इस प्रकार यहां पत्रों के प्रकाश में साहित्यिक और साहित्येतर क्षेत्रों की विभूतियों को देखने-परखने का प्रयास किया गया है ।

चतुर्थ अध्याय में हिन्दी पत्र-साहित्य में उपलब्ध समसामयिक सन्दर्भों का विश्लेषण किया गया है । अध्ययन की सुविधा की दृष्टि

से इन सन्दर्भों को राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक और साहित्यिक - इन चार विभागों में बांटा गया है । प्रथम तीन विभागों के सन्दर्भों की चर्चा नवजागरण-काल को केन्द्र में रखकर की गयी है और साहित्यिक सन्दर्भों का विश्लेषण 'साहित्यिक विवादों एवं आन्दोलनों', 'साहित्यिक चोरी', 'साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं की स्थिति' आदि अनुभागों के अन्तर्गत किया गया है । इन सन्दर्भों से समाज के विविधवर्णी इतिहास पर जो प्रकाश पड़ता है, उसकी विस्तार से चर्चा की गयी है ।

पंचम अध्याय में हिन्दी पत्र-साहित्य में प्राप्त शिल्प और शैली सम्बन्धी विशेषताओं का परिचय दिया गया है । प्रारम्भ में शिल्प और शैली का परस्पर सम्बन्ध स्पष्ट किया गया है । तत्पश्चात् हिन्दी पत्र-साहित्य में शिल्प और शैली का अध्ययन चार अनुभागों में प्रस्तुत किया गया है । पहले भाग में पत्र-लेखन पद्धति के वैविध्य, दूसरे में पत्रों के भाषा-विधान, तीसरे में पत्रों में प्राप्त विविध गद्य-शैलियों और चौथे में पत्रों की भावगत शैलियों की सोदाहरण चर्चा की गयी है । इस प्रसंग में इस बात की ओर संकेत भी कर दिया गया है कि साहित्यकारों तथा विभिन्न क्षेत्रों के मनीषियों ने अपने पत्रों को साहित्य समझकर नहीं लिखा है, तथापि इनमें उनकी सहजात प्रतिभा के स्पष्ट दर्शन होते हैं । इस दृष्टि से पत्र-साहित्य में प्राप्त शिल्पगत विशेषताओं का अपना पृथक् महत्व है ।

षष्ठ अध्याय में प्रबन्ध का उपसंहार किया गया है । इसमें हिन्दी पत्र-साहित्य की उपलब्धियों, सीमाओं तथा सम्भावनाओं की संक्षिप्त चर्चा की गयी है ।

इस प्रकार छः अध्यायों में विभक्त प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में लेखक ने अपनी मौलिकता बनाये रखने का भरसक प्रयत्न किया है । साथ ही, "पत्र-विधा" के सम्बन्ध में विद्वानों के मतों के निष्कर्षों में कुछ अपना भी जोड़ने का प्रयास किया है ।

प्रबन्ध के अन्त में "परिशिष्ट" के अन्तर्गत प्रमुख उपजीव्य-ग्रंथों, सहायक-ग्रंथों पत्र-पत्रिकाओं आदि की अकारादि क्रम से तालिका प्रस्तुत की गयी है ।